संपादकीय

कम हों धमाके

पटाखों को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने अंतिम कानूनी स्थिति स्पष्ट कर दी है। मंगलवार को सुनाए गए अपने फैसले में उसने पटाखों की बि ी पर पूरी तरह से बैन लगाने से मना कर दिया है, पर इस बारे में उसने कुछ शर्तें जरूर तय कर दी हैं। अदालत ने साफ किया है कि पटाखे केवल लाइसेंस धारी व्यापारी ही बेच सकते हैं, वह भी पर्यावरण को कम से कम नुकसान पहुंचाने वाले। इनकी ऑनलाइन बि ी नहीं की जा सकती। कोर्ट ने दिवाली के दिन पटाखे फोड़ने की समय सीमा भी तय कर दी है। दिवाली की शाम 8 से 10 बजे तक ही पटाखे फोड़े जा सकते हैं।

याद रहे कि सुप्रीम कोर्ट में लगाई गई एक याचिका में वायु प्रदूषण पर लगाम लगाने के लिए देश भर में पटाखों के उत्पादन और बि ी पर रोक लगाने की मांग की गई थी। अदालत ने कहा कि संविधान का अनुच्छेद-21 (जीवन का अधिकार) सभी लोगों पर लागू होता है और पटाखों पर देशव्यापी प्रतिबंध पर विचार करते समय संतुलन बनाए रखना जरूरी है। जाहिर है, कोर्ट ने जोखिम भरे पटाखा उद्योग में कार्यरत लाखों लोगों की रोजी-रोटी को ध्यान में रखा है। पिछले साल दिवाली के मौके पर कोर्ट ने दिल्ली-एनसीआर में पटाखे की बि ी पर रोक लगाई थी लेकिन उसका कोई खास असर नहीं हुआ। उलटे एक खास राजनीतिक दल से जुड़े लोगों ने इसे हिंदू आस्था में हस्तक्षेप बताते हुए घर-घर पटाखे बांटे। दिल्ली सरकार और केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) ने बाद में कहा कि वायु प्रदूषण पिछली दिवाली के मुकाबले कुछ कम रहा लेकिन धमाकेदार पटाखों के अधिक इस्तेमाल से ध्वनि प्रदूषण बढ़ गया।

इस बार भी ध्वनि और वायु प्रदूषण घटने की खास उम्मीद नहीं लग रही। सबसे पहले तो यही तय करना कठिन है कि कौन से पटाखे पर्यावरण के अनुकूल हैं। पटाखों की बि ी पर नजर रखना भी बहुत मुश्किल है। और महज दो घंटे पटाखे फोड़ने का नियम भला कौन मानेगा, वह भी तब जब कुछ लोग खुलेआम इस आदेश को धार्मिक मामले में हस्तक्षेप बता रहे हों और परोक्ष रूप से जनता को अधिक से अधिक पटाखे फोड़ने के लिए प्रेरित कर रहे हों। इस मामले में स्थानीय एसएचओ की जवाबदेही तय की गई है, जिसके लिए लोगों को पटाखे फोड़ने से रोकना लगभग असंभव है। सचाई यह है कि दिवाली पर प्रदूषण फैलने की बात अभी जनमानस के अजेंडा पर काफी नीचे है। लोग अभी इसी मानसिकता में जीते हैं कि एक दिन दस-बीस पटाखे जला ही लिए तो कौन सी आफत आ जाएगी। प्रदूषण के लिए वे सदियों से चली आ रही परंपरा क्यों छोड़ें। ऐसे विचार धीरे-धीरे ही जाते हैं। पटाखे के खिलाफ मुहिम जारी रहनी चाहिए। कभी तो लोग समझेंगे कि हमारी जो रस्में जिंदगी पर भारी पड़ने लगेंगी, उन्हें देर-सबेर हमें बदलना ही होगा।

अब डीजल करेगा आपकी जेब ढीली, हो सकता है पेट्रोल से भी महंगा

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत के साथ डीजल के मूल्य में वृद्धि लगातार जारी रही तो जल्द ही डीजल की कीमत पेट्रोल से अधिक हो जाएगी। फिलहाल पेट्रोल के मुकाबले डीजल पर टैक्स ज्यादातर राज्यों में काफी कम है। लेकिन अंतरराष्ट्रीय बाजार में डीजल की कीमतों में उछाल से पेट्रोल-डीजल की कीमतों में अंतर तेजी से कम होता जा रहा है। इंडियन ऑयल के आंकड़ों के मुताबिक, डीलर मूल्य (बिना किसी टैक्स और डीलर कमीशन के) पर डीजल की कीमत पेट्रोल की तुलना में पांच रुपये छह पैसे प्रति लीटर अधिक है। लेकिन पेट्रोल के मुकाबले डीजल पर टैक्स और डीलर कमीशन 11 रुपये 58 पैसे प्रति लीटर कम है। इस कारण बाजार में पेट्रोल और डीजल की कीमत में अभी अंतर सिर्फ छह रुपये 52 पैसे प्रति लीटर (22 अक्तूबर के मूल्य के मुताबिक) है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में डीजल की कीमत बढ़ी तो यह फर्क और कम होगा।

कोटक महिंद्रा बैंक का दूसरी तिमाही का शुद्ध लाभ 21 प्रतिशत बढ़कर 1,747 करोड़ रुपये

नयी दिल्ली (आरएनएस)। निजी क्षेत्र के कोटक महिंद्रा बैंक का एकीकृत शुद्ध लाभ चालू वित्त वर्ष की सितंबर में समाप्त दूसरी तिमाही में 21.3 प्रतिशत बढ़कर 1,747.37 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। बैंक ने इससे पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 1,440.68 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया था। शेयर बाजारों को भेजी सूचना में बैंक ने कहा कि तिमाही के दौरान उसकी कुल आय बढ़कर 10,829.08 करोड़ रुपये पर पहुंच गई, जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 9,140.40 करोड़ रुपये थी। सितंबर के अंत तक बैंक की सकल गैर निष्पादित आस्तियां (एनपीए) घटकर कुल ऋण का 1.91 प्रतिशत रह गई, जो एक साल पहले समान अवधि में 2.14 प्रतिशत थीं। मूल्य के हिसाब से तिमाही के अंत तक बैंक का सकल एनपीए 4,302.17 करोड़ रुपये पर रहा, जो एक साल पहले समान अवधि में 4,065.41 करोड़ रुपये था। इसी तरह बैंक का शुद्ध एनपीए भी घटकर 0.73 प्रतिशत या 1,617.66 करोड़ रुपये रह गया जो एक साल पहले समान अवधि में 1.08 प्रतिशत या 2,036.13 करोड़ रुपये था। तिमाही के दौरान बैंक का डूबे कर्ज और अन्य आकस्मिक खर्चों के लिए प्रावधान बढ़कर 359.71 करोड़ रुपये पर पहुंच गया, जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 252.86 करोड़ रुपये था।

बंद हो जाएंगी सैकड़ों पोर्न वेबसाइट, केंद्र सरकार का बड़ा आदेश

नई दिल्ली। सरकार ने उत्तराखंड हाई कोर्ट के आदेश के बाद इंटरनेट सेवा प्रदाताओं (आईएसपी) को अश्लील सामग्री दिखाने वाली 827 वेबसाइट को बंद करने का निर्देश दिया है. आधारिक सूत्रों ने इस बारे में जानकारी दी. न्यायालय ने हाल ही में अश्लीलता फैला रही 857 वेबसाइटों को बंद करने का आदेश दिया था. हालांकि, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने 827 वेबसाइटों को बंद करने के लिए कहा है.

30 वेबसाइट पर अश्लील सामग्री नहीं मिली

जांच में 857 में से 30 वेबसाइट पर अश्लील सामग्री नहीं पाई है.

इस फील्ड में होंगी 4 साल में 1.2 करोड़ नौकरियां

नई दिल्ली। देश में इंटरनेट सेवा क्षेत्र 2022 तक 1.2 करोड़ नये रोजगार सृजित कर सकता है. फिलहाल इस क्षेत्र में करीब 10 लाख लोगों को नौकरी मिली हुई है. मंगलवार को जारी एक रिपोर्ट में यह कहा गया है. इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा प्रकाशित 'भारत में इंटरनेट सेवाओं का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव' शीर्षक से जारी रिपोर्ट के अनुसार मोटे तौर पर करीब 33.8 अरब डॉलर मूल्य का क्षेत्र 2022 में 76.4 अरब डॉलर का हो जाने का अनुमान है. रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि देश में इंटरनेट उपयोग करने वालों की संख्या 48.1 करोड़ से बढ़कर 2022 तक 76.2 करोड़ होने की उम्मीद है. इसका प्रमुख कारण इंटरनेट कनेक्टिविटी का सस्ता होना है.

इसके अनुसार देश में स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं की संख्या भी 1.75 गुना बढ़कर 52.6 करोड़ पहुंच जाने का अनुमान है. इंटरनेट सेवा की प्रौद्योगिकी और कारोबारी पक्ष के बारे में रिपोर्ट में कहा गया है कि बुनियादी तौर पर इंटरनेट जरूरत के अनुसार चीजों में बदलाव लाने के साथ ग्राहकों की आकांक्षाओं और मांग को पूरा करने में मददगार होगा. इसमें कहा गया है कि सरकार की अनुकूल नीतियों, इंटरनेट कनेक्टिविटी के विस्तार के लिए बेहतर ढांचागत सुविधा, विकसित वितरण नेटवतर्क समेत अन्य चीजों से क्षेत्र 124 अरब डॉलर का हो सकता है.

भारत आ रहा है ब्रिटेन का चायवाला, फ्रैंचाइजी इंडिया से मिलाया हाथ

लंदन (आरएनएस)। फ्रैंचाइजी इंडिया ने ब्रिटेन के चर्चित भारतीय नास्ता एवं चाय ब्रैंड चायवाला के साथ हाथ मिलाया है। इस समझौते के तहत चायवाला की अगले पांच साल में भारत में 150 से 200 रेस्तरां खोलने की योजना है। कंपनी ने कहा कि भारत में चायवाला ब्रैंड को स्थापित करने के लिए उसने इस सप्ताह ब्रिटेन की कंपनी (चायवाला) के साथ मास्टर फ्रैंचाइजी डील की है। चायवाला के एक रेस्तरां पर 40 लाख रुपये का निवेश होने का अनुमान है।

फ्रैंचाइजी इंडिया ने बयान में कहा, चायवाला अपनी विशेष कॉफी और चाय के साथ मसाला चिप्स, बॉम्बे सैंडविच, चिल्ली पनीर, बटर चिकन, रोटी, पराठा और भारतीय नास्ता समेत अन्य उत्पादों की पेशकश करेगा। रेस्तरां के तौर चायवाला की शुरुआत 2015 में हुई थी। अब तक उसने ब्रिटेन में 15 स्टोर खोल लिए हैं।

आज का राशिफल

मेष: एकाग्रता कम रहने के कारण मन से आप दुखी रहेंगे। निवेश करने के बारे में सोच रहे लोग थोड़ा सोच-समझकर कोई फैसला लें। पारिवारिक वातावरण में सुधार होगा। धार्मिक कार्यों में भाग लेंगे।

वृषभ: नए मित्र बनेंगे। संतान की प्रगति से मन पुलकित हो जाएगा। पर्यटन या प्रवास का योग हैं। स्वजनों पर खर्च होगा। उनके साथ मतभेद भी रहेंगे। धार्मिक कार्यों के पीछे खर्च होगा।

मिथुन: व्यापारी-वर्ग के लिए आज का दिन शुभ है। व्यापार में वृद्धि होने के साथ-साथ सफलता और उगाही का धन भी प्राप्त होगा। पिता तथा बड़े-बूढ़ों से लाभ होगा। लक्ष्मीजी की कृपादृष्टि रहेगी। मित्रों से लाभ होगा। कहीं घूमने भी जा सकते हैं।

कर्क: दिन का प्रारंभ कुछ अशांति के साथ हो सकता है। पेट के कारण परेशान हो सकते हैं। संतान के विषय में भी चिंता अधिक रहेगी। साथ ही मन में प्रसन्नता और शरीर में स्फूर्ति का अनुभव होगा। मान-प्रतिष्ठा और उच्च पद प्राप्त होगा।

सिंह: आज का दिन आपके लिए मध्यम फलदायी रहेगा। अनैतिक कार्यों से दूर रहने की सलाह गणेशजी देते हैं। शारीरिक और मानसिक श्रम अधिक रहेगा। आकस्मिक धन लाभ होगा। संतान के विषय में चिंता हो सकती है। वाद-विवाद टालिएगा।

कन्या: कलाक्षेत्र के प्रदर्शन से एवं सामाजिक दृष्टि से आपको यश-कीर्ति और मान-सम्मान प्राप्त होगा। मनोरंजन के क्षेत्र में आपका दिन आनंदपूर्ण बीतेगा। व्यापारियों को उगाही का धन मिलने की संभावना है।

तुला: आज का दिन आपके लिए शुभ फलदायी है। किसी भी कार्य को आप दृढ मनोबल से करेंगे। मन को शांत रखें। वाणी में संयम रखें। कलाकारों के लिए आज का दिन शुभ है।

वृश्चिक: विद्यार्थियों के लिए भी समय अनुकूल है। शेयर-सट्टे में लाभ होगा। मनोबल दृढ़ और आत्मविश्वास से भरपूर होगा। स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। प्रतिस्पर्द्धियों के समक्ष विजय प्राप्त होगी।

धनु: आज आपकी माता का स्वास्थ्य प्रभावित होने से आप परेशान होंगे। इससे आपका भी स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। धन और कीर्ति की हानि होगी।

मकर: जीवनसाथी के साथ व्यवहार अधिक मधुरतापूर्ण होगा। मित्रों के साथ पर्यटन पर जाने का मन बना सकते हैं। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। प्रतिस्पर्द्धियों पर विजय प्राप्त होगी।

कुंभ: खर्च पर आपको संयम रखना होगा। साथ-साथ क्रोध और जीभ पर भी संयम रखना होगा। किसी के साथ वाद-विवाद में उग्रता न हो जाए और साथ-साथ नकारात्मक विचार भी मन से दूर हो जाए।

मीन: आज आपके घर में धार्मिक कार्य होंगे। परिवार में आनंदमय वातावरण रहेगा। कार्य सफलता मिलेगी। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

विराट कोहली ने वनडे क्रिकेट में 10 हजार रन किए पूरे

नई दिल्ली। टीम इंडिया के कप्तान विराट कोहली ने बुधवार को वेस्टइंडीज के खिलाफ खेले गए पांच मैचों की सीरीज के दूसरे वनडे में इतिहास रच डाला। वनडे क्रिकेट में सबसे तेज 10,000 रनों का वर्ल्ड रिकॉर्ड अब विराट कोहली के खाते में दर्ज हो गया है। विराट ने नॉटआउट 157 रनों की पारी के दौरान वैसे तो दर्जनों रिकॉर्ड्स तोड़े, लेकिन सबसे तेज 10,000 रन पूरा करना इनमें सबसे बड़ा रिकॉर्ड था। क्रिकेट जगत की तमाम बड़ी हस्तियों ने विराट को इसके लिए बधाई दी है। सोशल मीडिया पर हर तरफ बस विराट की ही चर्चा हो रही है।

बैडमिंटन टूर्नामेंट में विजयी शुरूआत करते हुये श्रीकांत और सायना प्री क्वार्टरफाइनल में

पेरिस। पांचवीं वरीयता प्राप्त भारत के किदाम्बी श्रीकांत और डेनमार्क ओपन की उपविजेता सायना नेहवाल ने फ्रेंच ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट में विजयी शुरूआत करते हुये दूसरे दौर में जगह बना ली है। विश्व में छठे नंबर के खिलाड़ी श्रीकांत ने पहले दौर में हांगकांग के वोंग विंग की विंसेट को 42 मिनट तक चले मुकाबले में लगातार गेमों में 21-19, 21-13 से हराया। दोनों खिलाड़ियों के बीच यह करियर की 10वीं भिड़ंत थी जिसके साथ ही श्रीकांत ने विंसेट के खिलाफ अपना रिकार्ड 6-4 कर लिया है। श्रीकांत का अगला मुकाबला कोरिया के ली डोंग क्यून से होगा। पिछले सप्ताह डेनमार्क ओपन में उपविजेता रही सायना ने पहले राउंड में जापान की साएना कावाकामी को 37 मिनट में 21-11 21-11 से पराजित किया। विश्व में 10वीं रैंकिंग की सायना का 37वीं रैंकिंग की जापानी खिलाड़ी के खिलाफ यह पहला मुकाबला था।

जानिए कब है करवा चौथ और क्या है पूजा का शुभ मुहूर्त

करवाचौथ के दिन सुहागन स्त्री अपने पति का लम्बी उम्र के लिए व्रत रखती है। इस दिन सुहागन स्त्री सज संवर कर रहती है व पति की लम्बी आयु का कामना के लिए व्रत कर पूजा करती है। इस साल करवाचौथ का व्रत 27 अक्टूबर यानी शनिवार के दिन है। शनिवार के दिन पूजा का शुभ मुहूर्त शाम 5.40 बजे से शाम 6.47 बजे तक है। यानि पूजा का शुभ समय करीब एक घंटे 7 मिनट का है इस समय में पूजा करना शुभ रहता है।करवा चौथ पर स्त्रिया अपने पति की लम्बी आयु के लिए व्रत रखती हैं तो कुंवारी लड़कियां अच्छा पति पाने के लिए व्रत रखती हैं।करवा चौथ का व्रत रखने वाली स्त्री पूरे दिन निर्जला व्रत रखती है, सोलह श्रृंगार करती है व चंद्रमा के दर्शन कर पूजा कर व्रत खोलती हैं। करवा चौथ में पत्नी छन्नी से चांद को देखने के बाद पति को देखकर ही भोजन ग्रहण करती हैं।

व्रत खोलने का समय

करवाचौथ के व्रत में चंद्रमा को अर्घ्य देने के बाद ही व्रत खोला जाता है। शनिवार के दिन करवा चौथ में इस बार चंद्रोदय शाम 7.55 मिनट में है। यानि चंद्रमा के दर्शन कर पूजा करके ही व्रत खोला जाएंगा।

करवा चौथ पूजन विधि

करवा चौथ की पूजा में शिव परिवार की पूजा करने का विधान है, इस दिन भगवान शिव, पार्वती, कार्तिकेय, गणेश व चंद्रमा का पूजन की जाती है। करवा चौथ में बालू या सफेद मिट्टी की वेदी बनाकर देवताओं को स्थापित किया जाता है। इसके बाद जल का लोटा और मिट्टी का करवा रखा जाता है। करवे के ढक्कन में चीनी व रुपया रखा जाता है। फिर इसमें रोली से स्वास्तिक बनाया जाता है। फिर सुख और सौभाग्य की कामना के लिए करवे में जल, चावल और गुड़ चढ़ाया जाता है। इस प्रकार करवे पर तेरह बार रोली से टीका लगाकर रोली चावल छिडकें। ऐसा करने के बाद हाथ में तेरह दाने गेहूं के लेकर करवा चौथ के व्रत की कथा सुनी जाती है। इसके बाद करवे को प्रणाम कर परिवार के बडों का आशीर्वाद लिया जाता है।

मेहमानों को इस तरह बनाकर खिलाएं गुलर कबाब

हारों के अवसर पर मेहमानों को कुछ खास बनाकर खिलाना चाहते है तो आज हम आपके लिए लाए है गुलर कबाब की रेसिपी , जो खाने में टेस्टी और बनाने में बेहद आसान है। चलिए जानते है इसे बनाने की विधि।

सामग्री - ग्रीन इलायची 4, ब्लैक इलायची 3, लौंग 6, दालचीनी 1 इंच, जीरा 1 टी स्पून, मटन कीमा 300 ग्राम, चना दाल 40 ग्राम, तेज पत्ता 1, नमक 3/4 चम्मच, पानी 200 मिलीलीटर, अंडे 1/2, पुदीना 15 ग्राम, धनिया 15 ग्राम, हरी मिर्च 1 चम्मच, किशमिश 40 ग्राम, नमक 1/2 चम्मच, नींबू छील 2 चम्मच, पाऊडर चीनी 1 चम्मच, आमचूर पाऊडर 3/4 चम्मच, तलने के लिए तेल, पुदीना 35 ग्राम, प्याज 40 ग्राम, हरी मिर्च 1 चम्मच, नमक 1 चम्मच, आमचूर पाऊडर 1 चम्मच, पानी 50 मिलीलीटर।

रेसिपी- सबसे पहले एक सूती कपड़ा लें। इसमें हरी इलायची, काली इलायची, लौंग, दालचीनी तथा जीरा कसकर बांधे। अब कुकर में कीमा, दाल,कपड़े में बांधे मसाले, तेज पत्ता, नमक तथा पानी मिलाकर ढक कर 4-5 सीटी लगवाएं। ढक्कन खोलें और तेज पत्ता और कपड़े में बाधें मसाले निकालें। मिश्रण को ब्लेंडर में डालकर 1/2 अंडे मिलाएं और ब्लेंड करें। इसे एक कटोरे में निकालकर एक तरफ रखें। एक ब्लेंडर में पुदीना, धनिया, हरी मिर्च, किशमिश, नमक, नींबू छील, पाऊडर चीनी तथा आमचूर पाऊडर मिलाएं औप पीस लें।

इसे एक कटोरे में स्थानांतरित करें और एक तरफ रखें। फिर अपने हाथ में कुछ मटन मिश्रण लें और अपनी उंगलियों की मदद से इसे फ़्लैट करें। अब, उस पर कुछ तैयार चटनी लगाएं और कटलेट में आकार देकर डीप फ्राई निकाल लें। एक ब्लेंडर में पुदीना, प्याज, हरी मिर्च, नमक, आमचूर पाउडर तथा पानी मिलाकर पीस लें। चटनी के साथ गर्मा गर्म सर्व करें।

शब्द सामर्थ्य-69

बाएं से दाएं

1. भारत के वर्तमान वित्तमंत्री 6. हित, उपकार 7. असमान, पूर्वोत्तर का एक राज्य 8. किसी वस्तु व्यक्ति आदि के पहचान सूचक संबोधन का शब्द, संज्ञा 10. शवस्थल पर बनाया गया मकान, योग का अंतिम अंग, तपस्या 13. इंकार करना, ना कहना 14. पिता, क्लर्क, सम्मानीय व्यक्ति 15. आय पर लगने वाला टैक्स, इंकमटैक्स 16. प्रतिद्वंद्वी, प्रेमिका का दूसरा प्रेमी 17. परंपरा, रीति, रिवाज 20. रुप से युक्त, चिह्न, लक्षण, नाटक, एक साहित्यिक अलंकार 23. लोग, प्रजा 25. नामी, नामवर, प्रसिद्ध 27. संसार का स्वामी, बादशाह, सम्राट, ईश्वर 28. फैलाना, खिंचाव पैदा करना।

ऊपर से नीचे

1. मारना, प्रहार करना, आघात करना 2. मिथ्याअभिमान, आडंबर 3. विपत्ति, आफत 4. मालदार, धनवान, अमीर 5. ज्ञान प्राप्त करना, अनुमान लगाना, कल्पना करना 7. हक 9. विवश, लाचार 11. मानकंद, नापने का पैमाना 12. अपमानित और तिरस्कृत 17. संतान उत्पन्न करने की क्रिया, जन्म देने की क्रिया 18. लंबे कपड़े का गट्ठा, पशुओं को रखने की जगह 19. जलयान, वायुयान, जलपोत 21. आश्रय, सहारा 22. थोड़ा, जरा, तनिक 24. जुर्म, गुनाह 26. बाघ की तरह का धारीदार हिंसक एवं विशाल पशु।

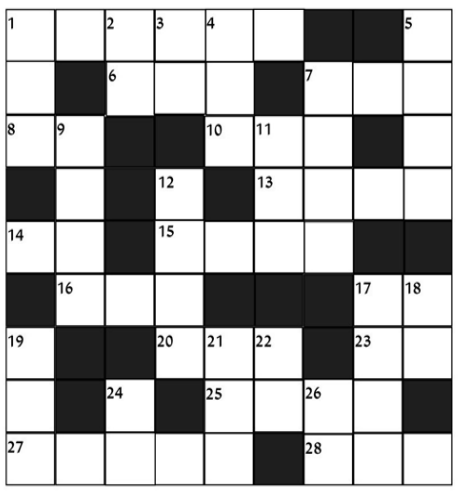

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 68 का हल

भू	कं	प	■	फा	य	दा	■	स
प	■	ल	ला	ट	■	य	ती	म
ति	ल	क	■	क	न	क	■	झ
■	क्ष्म	■	■	■	रे	■	■	■
ग	ण	क	■	सं	श	य	■	सौ
ह	■	या	च	क	■	म	न्न	त
रा	क्ष	स	■	र	क्ष	क	■	न
■	त्रि	■	■	■	मि	■	■	■
शा	य	री	■	का	त	र	■	गो

सू-दोकू-69

	2			6			1	
3			4			2		
							6	
6					4			
	9		5			6		1
4		3			9			2
	8		2				7	
1		2		4		9		6

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक रख सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र. 68 का हल

8	7	6	9	5	1	2	3	4
1	3	9	2	8	4	5	6	7
4	5	2	3	7	6	9	1	8
2	8	5	4	6	7	1	9	3
3	1	7	8	9	2	4	5	6
6	9	4	1	3	5	7	8	2
9	4	1	6	2	8	3	7	5
7	2	8	5	1	3	6	4	9
5	6	3	7	4	9	8	2	1